बिहार राज्य होमियोपैथिक संघ के प्रथम राज्य स्तरीय सम्मेलन में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–27.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:00 बजे, स्थान–राजगीर)

बिहार राज्य होमियोपैथिक संघ के अध्यक्ष डॉ॰ दाऊद अली जी, विधायक श्री रविज्योति कुमार जी, उपाध्यक्ष डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी, महासचिव डॉ॰ अनिल कुमार वर्मा जी, पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री साबिर अली जी, श्री शिवराज सिंह जी, कार्यक्रम में उपस्थित राज्य एवं राज्य के बाहर से पधारे हुए प्रमुख होमियोपैथिक चिकित्सकगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !!

बिहार राज्य होमियोपैथिक संघ द्वारा आयोजित 'प्रथम राज्य स्तरीय सम्मेलन' में उपस्थित सभी चिकित्सकगण तथा होमियोपैथिक विधा से जुड़े सभी लोगों का बिहार की धरती पर हार्दिक स्वागत है। आप सभी अवगत हैं कि होमियोपैथिक के जनक डॉ॰ हैनिमैन का जन्म 10 अप्रील 1755 ई॰ में यूरोप के जर्मनी के माइसेन नामक नगर के एक गरीब परिवार में हुआ था। डॉ॰ हैनिमैन एलोपैथिक के श्रेष्ठ चिकित्सक के साथ–साथ रसायन विज्ञान के ज्ञाता भी थे।

कहा जाता है कि एक बार डॉ॰ हैनिमैन का ''कुलेन मैटेरिया मेडिका'' के अनुवाद के क्रम में वर्णित ''कुनैन'' नामक औषधि पर ध्यान गया, जिसके सेवन से मलेरिया रोग ठीक होता है। स्वस्थ स्थिति में इसके सेवन से उलटे मलेरिया जैसे लक्षण प्रकट होते हैं। ऐसा देखकर हैनिमैन ने मानव शरीर और मन पर औषधियों के द्वारा उत्पन्न किये गये लक्षणों, अनुभवों और प्रभाव को लिपिबद्ध करना शुरू किया और वहीं से होमियोपैथिक नई चिकित्सा पद्धति का जन्म हुआ। यद्यपि हमारे भारतीय आयुर्वेदिक ग्रंथों में उल्लिखित सिद्धांत –''विषस्य विषमौषधम्'' अर्थात्, विष ही विष की निवारक औषधि है, काफी पहले से

प्रचलित है और उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''सदृश चिकित्सा पद्धति'' भारत की ही देन है, परन्तु आधुनिक युग में सदृश चिकित्सा पद्धति को 'होमियोपैथी' के नाम से परिष्कृत परिपूर्ण और वैज्ञानिक रूप देने का श्रेय निश्चित रूप से डॉ॰ हेनीमैन को ही दिया जाना चाहिए।

लगभग 50 वर्षों के बाद सन् 1810 ई॰ में फ्रेंच डॉ॰ जॉन मार्टिन हेन्गबरगर भारत के पंजाब में आये और महाराणा रंजीत सिंह का होमियोपैथिक विधा से सफल इलाज कर, इस चिकित्सा–पद्धति का प्रचार–प्रसार शुरू किया, जिससे प्रभावित होकर सन् 1847 में डॉ॰ सेमुल बुकिंग ने दक्षिण भारत के तंजोरा नामक स्थान पर होमियोपैथिक अस्पताल की स्थापना की। यहीं से भारत में होमियोपैथिक विधा का प्रादुर्भाव माना जाना चाहिए। बाद में सन् 1885 ई॰ में कलकत्ता होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई। बंगाल देश का पहला राज्य था, जहाँ के सांसद श्री सतीश चन्द्र सामंता ने अहम भूमिका निभाकर होमियोपैथिक स्टेट फैकल्टी की स्थापना करायी। सन् 1956 में स्वास्थ्य मंत्रालय ने होमियोपैथिक कमिटी का गठन कर डॉ॰ के॰जी॰ सक्सेना को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया। भारत सरकार द्वारा 17 दिसम्बर, 1973 को सेन्ट्रल कॉन्सिल ऑफ होमियोपैथिक का गठन कर ''सेन्ट्रल कॉन्सिल ऑफ होमियोपैथिक एक्ट, 1973'' बनाते हुए 'रिसर्च–कॉन्सिल' की स्थापना की गई। सरकार होमियोपैथिक विकास के लिए आज भी तत्पर है। आयुष मंत्रालय के माध्यम से इस चिकित्सा–पद्धति को सर्व सुलभ बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

यह सर्व विदित है कि होमियोपैथिक दवा का मानव शरीर पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता है और इससे जटिल से जटिल रोग का भी ईलाज संभव है। यह चिकित्सा–पद्धति सस्ती भी है तथा बच्चे, बूढ़े, नवजवान, महिला सबके लिए फायदेमंद है। इस पद्धति के बारे में एक धारणा है कि यह धीरे–धीरे रोग का निदान करती है, किन्तु बीमारी को जड़–मूल से मिटाने में सक्षम

होती है। कहा यह भी जाता है कि अगर दवा अचूक चयनित हो गई, तो बीमारी भी शीघ्र दूर हो जाती है।

होमियोपैथिक विधा के उत्थान एवं प्रचार–प्रसार के लिए यह आवश्यक है कि इसके चिकित्सक गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर रोगों का निदान करें, ताकि लोगों की आस्था इस पद्धति के प्रति और अधिक बढ़ सके। मुझे लगता है, केन्द्र एवं राज्य सरकार भी इस चिकित्सा–पद्धति की लोकप्रियता को देखकर पर्याप्त सहायता देगी, ताकि इसका समुचित विकास हो सके।

होमियोपैथिक चिकित्सा–पद्धति के विकास एवं आधुनिक शोध–निष्कर्षों पर भी सम्मेलन के विभिन्न सत्रों के दौरान सार्थक विचार–विमर्श हुआ होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। आशा है, होमियोपैथिक–चिकित्सा–पद्धति के विकास हेतु, आपने कार्य–योजनाओं की जो रूपरेखा तैयार की होगी, उसपर आप तत्परतापूर्वक आगे बढ़ेंगे। मैं आपके संगठन के इस 'प्रथम राज्य स्तरीय सम्मेलन' के भव्य आयोजन पर आपको बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।